सरकारी व गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के संस्थागत वातावरण के परिप्रेक्ष्य में छात्र अनुशासन, संज्ञानात्मक लचीलापन एवं आत्म प्रभाविकता का अध्ययन

आई0आई0एम0टी0 विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0)

शिक्षा संकाय के अन्तर्गत शिक्षाशास्त्र विषय में पी0एच0डी0
की उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध रूपरेखा

शोध निर्देशिका
डॉ0 शैली
सह–आचार्या
आई0आई0एम0टी0 विश्वविद्यालय,
मेरठ (उ0प्र0)

शोधार्थी
अशोक कुमार
नामांकन संख्या–IIMTU/2199024

शोध केन्द्र
शिक्षा संकाय
आई0आई0एम0टी0 विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0)
2021

सरकारी व गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के संस्थागत वातावरण के परिप्रेक्ष्य में छात्र अनुशासन, संज्ञानात्मक लचीलापन एवं आत्म प्रभाविकता का अध्ययन

परिचय

"अच्छा दिमाग होना ही काफी नहीं है, मुख्य बात इसका अच्छे से उपयोग करना है"।

–रेने डेस्कर्टेस [1]

मनुष्य अन्य जानवरों से इस प्रकार भिन्न है कि उसके पास आलोचनात्मक, रचनात्मक और आत्मनिरीक्षण करने की क्षमता है। यह क्षमता कई लाभ भी प्रदान करती है जो प्राकृतिक दुनिया में हमारे विशेष स्थान को जोड़ते हैं। मानव भाषा के विकास के महान स्तर के कारण, संचार सटीक और अमूर्त हो सकता है। बोली जाने वाली और लिखित भाषा हमें जटिल विचारों, भावनाओं और इरादों को संप्रेषित करने में मदद कर सकती है, जो पीढ़ीगत सहयोग और ज्ञान हस्तांतरण को बढ़ावा देती है। अन्य प्रजातियाँ मनुष्य की तरह अत्यंत कठिन मुद्दों को हल करने में असमर्थ हैं। हमारी अत्यधिक विकसित संज्ञानात्मक क्षमताएं हमें समस्याओं को हल करने, जटिल शासकीय संरचनाओं का निर्माण करने और परिष्कृत प्रौद्योगिकी विकसित करने में सक्षम बनाती हैं। हमारी रचनात्मक सोच ने बहुत सारे उपकरण, उपकरण और प्रौद्योगिकियां तैयार की हैं जो हमारे जीवन की गुणवत्ता में सुधार करती हैं, जिनमें परिष्कृत कंप्यूटर और अंतरिक्ष अन्वेषण से लेकर साधारण पत्थर के उपकरण तक शामिल हैं। मनुष्य जटिल सामाजिक नेटवर्क और सांस्कृतिक परंपराएँ बनाते हैं। हमारी संज्ञानात्मक क्षमताएं हमें ऐसे रीति–रिवाज, नियम और संस्थान बनाने की अनुमति देती हैं जो व्यवहार को नियंत्रित करते हैं, सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा देते हैं और व्यापक सहयोग की अनुमति देते हैं।

संपूर्ण मानव क्षमता को सुविधा प्रदान करने के लिए एक उपयुक्त वातावरण आवश्यक है। एक सकारात्मक वातावरण मनुष्य को बहुत आत्म–जागरूक बनाता है और अपने विचारों और कार्यों के बारे में आत्मनिरीक्षण करने में सक्षम बनाता है। पूर्व अनुभवों से सीखना, नैतिक निर्णय लेना और व्यक्तिगत विकास सभी इस प्रतिबिंब से संभव हो जाते हैं। मनुष्य नैतिक सोच और पारस्परिक सहानुभूति में सक्षम हैं। सहानुभूति और नैतिक चेतना न्याय, करुणा और परोपकारिता के कार्यों को

जन्म देती है – ये सभी सामाजिक भलाई को आगे बढ़ाते हैं। कला का उत्पादन करने और उसका आनंद लेने की क्षमता केवल मनुष्यों के लिए है। यह रचनात्मक अभिव्यक्ति अधिकतर वातावरण से प्रभावित होती है। इसलिए मनुष्य की सही प्रगति और उनकी क्षमता के लिए प्रभावी पर्यावरण बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मानव क्षमताओं के सर्वांगीण विकास के लिए सकारात्मक वातावरण के साथ–साथ प्रभावी शिक्षा भी महत्वपूर्ण है। शैक्षिक संस्थान यह अच्छी तरह से जानते हैं कि सकारात्मक वातावरण प्रदान करके वे अपने छात्रों को सर्वश्रेष्ठ बना सकते हैं। एक अच्छा शैक्षिक वातावरण विद्यार्थियों के लिए आवश्यक संज्ञानात्मक लचीलेपन को बढ़ावा देता है ताकि कठिनाइयों का सामना करने में रचनात्मक रूप से सोच सकें और असफलताओं से उबर सकें। परिणामस्वरूप वे अधिक प्रभावी और अनुशासित हो जाते हैं। विद्यार्थी पीढ़ियों के बीच ज्ञान हस्तांतरित करने और अनुभवों की एक विस्तृत श्रृंखला से सीखने की क्षमता हासिल करते हैं। केवल ऐसे वातावरण में जहां सीखने को अच्छी तरह से बढ़ावा दिया जाता है, इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप संस्कृति और प्रौद्योगिकी में निरंतर प्रगति हो सकती है। छात्रों को शैक्षणिक संस्थानों के वातावरण द्वारा प्राकृतिक दुनिया को समझने के लिए वैज्ञानिक जांच का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया जाता है। ब्रह्मांड, जीवन और उनके स्वयं के अस्तित्व में गहरी अंतर्दृष्टि आलोचनात्मक विचार और चीजों की व्यवस्थित जांच की उनकी क्षमता से संभव हुई है।

इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता है कि छात्रों का समग्र प्रदर्शन उनके अनुशासन के स्तर से अत्यधिक प्रभावित होता है। इसके अलावा सामान्य अनुशासन जो एक प्रेरित घटना है तथा संज्ञानात्मक लचीलापन और आत्म–प्रभाविकता का स्तर भी छात्रों के प्रदर्शन के सबसे महत्वपूर्ण निर्धारक हैं। महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में छात्रों की सामान्य क्षमताओं के परीक्षण के संबंध में छात्रों के बीच सामान्य अनुशासन और संज्ञानात्मक लचीलापन और आत्म–प्रभाविकता का स्तर सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है, क्योंकि ये गुण यह तय करते हैं कि एक छात्र किस प्रकार के प्रदर्शन में सक्षम है। ये गुण न केवल परीक्षा में अच्छी श्रेणी प्राप्त करने और अच्छा प्रदर्शन दिखाने के लिए आवश्यक हैं, बल्कि ये वास्तविक जीवन में सफल होने की आवश्यकता के संबंध में भी महत्वपूर्ण हैं। जब छात्र वास्तविकता की दुनिया में प्रवेश करते हैं तो उन्हें अत्यधिक प्रतिस्पर्धी माहौल का सामना करना पड़ता है। कुछ लोग ऐसे होते हैं जो जीवन में सफल होने के लिए समृद्ध गुणों के साथ पैदा होते हैं, हालांकि अधिकांश लोगों के साथ ऐसा नहीं होता है, जिन्हें कड़ी मेहनत के माध्यम से इन गुणों को हासिल करने के लिए मजबूर किया जाता है। इस आवश्यकता के कारण, छात्रों में इन गुणों के स्तर को पहचानना और उन कारकों को जानना जरूरी है, जो छात्रों के अच्छे, औसत या खराब

व्यवहार के लिए जिम्मेदार हैं। यह अभ्यास इन लक्षणों और गुणों के स्तर को समय पर निर्धारित करने के उद्देश्य से कार्य करता है, जिन्हें उचित प्रशिक्षण और अभ्यास के माध्यम से छात्रों में विकसित किया जा सकता है। इस संबंध में प्रशिक्षण आवश्यक है क्योंकि छात्र जन्म से इन सभी गुणों से संपन्न नहीं हो सकते हैं, क्योंकि हर किसी के लिए इन गुणों का होना आम बात नहीं है और संबंधित व्यक्ति को जीवन में बने रहने और उत्कृष्टता हासिल करने के लिए इन्हें हासिल करना पड़ सकता है।

अनुशासन, संज्ञानात्मक लचीलापन की क्षमता और आत्म–प्रभाविकता छात्रों की इस विश्वास प्रणाली को मजबूत करने में काफी मदद करती है कि वे आत्मविश्वास के साथ विभिन्न कार्यों को पूरा कर सकते हैं या लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं। उन्हें अपने व्यवहार को नियंत्रित करना और तत्काल वातावरण पर प्रभाव डालना आसान लगता है, जिसमें वे जीवित रहते हैं। रोजगार के स्थानों के अलावा, स्कूलों और कॉलेजों में विशेष रूप से आत्म–प्रभाविकता महत्वपूर्ण है। इस संबंध में यह पता लगाने के लिए आत्म–प्रभाविकता और संज्ञानात्मक लचीलापन के स्तर की जांच करना हमेशा अनिवार्य है कि क्या संबंधित छात्र वास्तविक समय के प्रतिस्पर्धी माहौल में फिट हो सकता है या उसे अपनी विश्वास प्रणाली में सुधार करने की आवश्यकता है। जिस गतिशील दुनिया का उन्हें सामना करना पड़ता है उसमें उच्च आत्म–प्रभाविकता का होना और भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह संबंधित व्यक्ति को यह विश्वास दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है कि वे सफलतापूर्वक कुछ करने में सक्षम हैं और उनमें जीवन में अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने की क्षमता है। आत्म–प्रभाविकता का उच्च स्तर किसी की अपनी क्षमताओं में विश्वास विकसित करने में सहायक होता है और व्यक्ति को उस स्थिति पर पकड़ बनाने में मदद करता है जिसका वह सामना करता है और दिए गए कार्य को कुशल और प्रभावी तरीके से प्रबंधित कर सकता है। ये गुण आत्म–विश्वास बढ़ाते हैं और लोगों को बेहतर परिणाम देते हैं। विशेष रूप से आत्म–प्रभाविकता में किसी व्यक्ति के मन की मनोवैज्ञानिक स्थिति और प्रेरणा के स्तर को किसी भी स्थिति में प्रभावित करने की क्षमता होती है। इसके अलावा आत्म–प्रभाविकता एक व्यक्ति का गुण है, जो यह निर्धारित करता है कि हम अपने लिए किस प्रकार के लक्ष्य निर्धारित करते हैं, और उन लक्ष्यों को प्राप्त करने का तरीका और अंततः उस स्थिति का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना जो इस प्रक्रिया में गलत हो गई है।

इसके अलावा, एक छात्र को शैक्षणिक वर्षों में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिसके लिए जिस शैक्षणिक संस्थान में उनका नामांकन होता है, उसके अनुशासन का पालन करने के अलावा आत्म–प्रभाविकता और संज्ञानात्मक लचीलापन के बेहतर स्तर की आवश्यकता होती है। यह उनकी

विश्वास प्रणाली है, जो बदले में आत्म–प्रभाविकता के स्तर से निर्धारित होती है, जो उन्हें अकादमिक क्षेत्र में उठाए गए हर उद्यम में और बाद में उनको जीवनवृत्ति के विकास में सफल बनाएगी। ये लक्षण यह पता लगाने के लिए महत्वपूर्ण हैं कि छात्रों के लिए किस प्रकार के अवसर उपलब्ध हैं और वे उपलब्ध अवसरों का उपयोग कैसे कर सकते हैं और उन्हें अपने विकास के लिए उपयोग कर सकते हैं। अत्यधिक प्रतिस्पर्धी माहौल में सफल होने की आवश्यकता को देखते हुए, छात्रों को जिस प्रकार के अनुशासन का सामना करना पड़ता है, उसके अलावा इन गुणों की जांच करना बेहद जरूरी है, ताकि प्रतिस्पर्धी आग्रह का स्तर और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त करने की क्षमता विकसित हो सके। छात्रों में उनके अनुशासन, आत्म–प्रभाविकता और संज्ञानात्मक लचीलापन के स्तर के आधार पर जीवनवृत्ति तक पहुंच बनाई जा सकती है।

वर्तमान अध्ययन इस आवश्यकता का संज्ञान लेता है और इस अनिवार्यता के साथ इस अध्ययन जिसका शीर्षक है, "सरकारी व गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के संस्थागत वातावरण के परिप्रेक्ष्य में छात्र अनुशासन, संज्ञानात्मक लचीलापन एवं आत्म प्रभाविकता का अध्ययन" को शुरू करने का प्रस्ताव करता है।

अध्ययन का औचित्य

भारत और विशेष रूप से पहाड़ी क्षेत्रों की शिक्षा प्रणाली, जो राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र से दूर हैं, को सुविधाओं और नीतिगत पहलों की कमी के कारण झटका लगा है। इस संबंध में छात्र ही वास्तविक पीड़ित है, जिसे उस प्रकार का सीखने का माहौल और शिक्षा प्रदान नहीं की जाती है, जो आज के आधुनिक प्रतिस्पर्धी माहौल में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए आवश्यक है।

यद्यपि देहरादून में कई सरकारी और निजी उच्च शिक्षण संस्थान हैं और वे अच्छी गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान कर रहे हैं, फिर भी यह इस क्षेत्र के छात्रों की वास्तविक क्षमता विकसित करने के लिए पर्याप्त नहीं है। सरकारी और निजी दोनों संस्थानों में कई समस्याएं हैं, जिन पर ध्यान देने की जरूरत है। यह विशेष रूप से महाविद्यालयों द्वारा अपनाई जाने वाली बुनियादी ढांचे और नीतियों की स्थिति है, जो छात्रों के समग्र विकास में बाधा के रूप में कार्य करती है। सबसे पहले, सरकारी संस्थानों के पास उचित बुनियादी ढांचे का अभाव है। उनके पास आधुनिक शिक्षा की जरूरतों को पूरा करने के लिए उचित सुविधाएं नहीं हैं। दूसरे, शिक्षकों पर अन्य अतिरिक्त कार्य का बोझ है, जो उन्हें पढ़ाने के अलावा भी करना पड़ता है, जिससे वे उचित शिक्षण पद्धति और छात्रों की समग्र शैक्षणिक भलाई के प्रति लापरवाह हो जाते हैं। इसके अलावा कई अन्य समस्याएं भी हैं, जो सरकारी

क्षेत्र के महाविद्यालयों में सामग्री की सही उपलब्धता और छात्रों के उचित प्रबंधन में बाधा डालती हैं। निजी क्षेत्र के महाविद्यालयों में छात्रों की शैक्षणिक और समग्र विकास और जरूरतों को पूरा करने के लिए अच्छा बुनियादी ढांचा और सभी आधुनिक तकनीक है। हालाँकि, वे भी केवल धूमधाम और दिखावे में लगे हुए हैं और उनमें सामग्री की कमी है, जिसका मूल कारण उनके संकाय सदस्यों की शैक्षणिक साख की गुणवत्ता है। निजी संस्थानों में कार्यरत अधिकांश शिक्षक या तो कम योग्य हैं या अनुभवहीन हैं। यदि संयोग से कुछ महाविद्यालयों में योग्य और अनुभवी शिक्षक हैं तो वे अतिरिक्त कार्य में लगे रहते हैं और छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में शामिल नहीं हो पाते हैं।

ये समस्याएं, कई अन्य समस्याओं के अलावा, देहरादून जिले के महाविद्यालयों द्वारा प्रदान की जा रही शिक्षा की गुणवत्ता और मानक को खराब कर रही हैं। और इस समय महाविद्यालयों की स्थिति और अनुशासन के स्तर, संज्ञानात्मक लचीलापन और उत्तराखंड राज्य के देहरादून जिले के सरकारी और निजी महाविद्यालयों के छात्रों के बीच आत्म–प्रभाविकता का जायजा लेना जरूरी है। इस अनिवार्यता और पृष्ठभूमि को देखते हुए हम इस अध्ययन जिसका शीर्षक है, "सरकारी व गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के संस्थागत वातावरण के परिप्रेक्ष्य में छात्र अनुशासन, संज्ञानात्मक लचीलापन एवं आत्म प्रभाविकता का अध्ययन" का प्रस्ताव करते हैं।

सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन

ब्ज कैट और जाल्कटा, 2006[2] ने संज्ञानात्मक लचीलेपन की जांच करने की कोशिश की थी जो पूरे साहित्य में इसके असंगत संचालन के कारण चुनौतीपूर्ण था। यहां, इस वैचारिक अस्पष्टता को संबोधित करने के लिए, वे सेट शिफ्टिंग प्रतिमानों का उपयोग करके संज्ञानात्मक लचीलेपन को अधिक सटीक रूप से परिभाषित करने का प्रयास करते हैं (विशिष्ट कार्यों के विवरण के लिए नीचे देखें)। जबकि उच्च–स्तरीय संज्ञानात्मक लचीलेपन का मूल्यांकन अक्सर कार्य स्विचिंग प्रतिमानों के साथ किया जाता है, सेट शिफ्टिंग संज्ञानात्मक लचीलेपन के पदानुक्रम में नीचे की ओर है, जो इस महत्वपूर्ण संज्ञानात्मक क्षमता के लिए एक मचान के रूप में कार्य करता है, इसलिए संज्ञानात्मक के इन दो पहलुओं के बीच अंतर करने के लिए एक मजबूत मिसाल है। लचीलापन और सबसे मौलिक रूप पर ध्यान केंद्रित करना।

एसोसिएशन ऑफ कॉलेजेस एंड यूनिवर्सिटीज, 2007 [3] के अनुसार महाविद्यालय में अपनाई गई अनुशासनात्मक नीति विद्यार्थी के अंकों पर ही नहीं अपितु उसके पूरे जीवन पर असर डालती है। इस कारण महाविद्यालयों को अपनी अनुशासनात्मक नीति बहुत ही सोच समझ कर बनानी चाहिए।

डी. रघवन, एवं एन मेघनाथ त्यागी, 2011 [4] ने अपने अध्ययन में पाया कि आत्म–प्रभाविकता जीवन के लगभग हर क्षेत्र को प्रभावित करती है और संबंधित व्यक्ति के समग्र व्यवहार और व्यक्तित्व को प्रभावित करती है। अपने सर्वेक्षण और विश्लेषण के माध्यम से अध्ययन से पता चला कि लोगों द्वारा अनुभव की जाने वाली चिंता के प्रकार और स्तर के साथ आत्म–प्रभाविकता का अंतर्निहित और जटिल संबंध है, न केवल विशिष्ट शैक्षणिक या कैरियर उन्मुख कार्यों में, बल्कि उन क्षेत्रों में भी, जो सामान्य हैं। रोजमर्रा की जिंदगी के सांसारिक कार्यों के रूप में। अध्ययन में आगे पाया गया कि आत्म–प्रभाविकता प्रदर्शन, चिंता और अवसाद के स्तर का महत्वपूर्ण निर्धारक है, एक व्यक्ति पिछले कुछ अवरोधों के कारण या हाथ में लिए गए कार्यों में कुछ विफलता के कारण महसूस कर सकता है।

फ्रिडसन, एट अल., 2012 [5] ने अपने अध्ययन में छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर आत्म–प्रभाविकता के प्रभाव पर प्रकाश डाला। अध्ययन में, विशेष रूप से, छात्रों द्वारा प्राप्त अंकों के क्षेत्र में और प्रतिस्पर्धी कार्यों को कुशल और प्रभावी तरीके से पूरा करने के संदर्भ में प्रदर्शित क्षमताओं के स्तर पर प्रकाश डाला गया।

एलब्ला, ए.आई.एफ., 2012 [6] अपने अध्ययन, "क्या सजा (शारीरिक या मौखिक) स्कूलों में अनुशासन का एक प्रभावी साधन है– ग्रेटर खार्तूम/सूडान में दो बुनियादी स्कूलों की केस स्टडी"। यद्यपि अधिकांश संस्थान छात्रों पर इन दंडों के प्रभाव पर ध्यान दिए बिना शारीरिक या मौखिक दंड का विकल्प चुनते हैं। यह न केवल उनके आत्मविश्वास को कम करता है बल्कि जीवन में व उनकी कक्षा में भी आत्मविश्वास की पूरी भावना को कम करता है।

तिवारी, 2014 [7] ने मध्य प्रदेश में उच्च शिक्षा संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण की जांच की। 22–आइटम संगठनात्मक वातावरण सर्वेक्षण प्रश्नावली का उपयोग करके उच्च शिक्षा संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण की जांच की गई। यह पाया गया कि उच्च शिक्षण संस्थानों का संगठनात्मक वातावरण स्कोर आम तौर पर अच्छा था और विभिन्न प्रशिक्षकों के बीच स्कोर में कोई अंतर नहीं था।

मोरेनो, वी., और स्लग, आर., 2015 [8] ने अपने अध्ययन शीर्षक "आंध्र प्रदेश, भारत में स्कूलों में बच्चों की सजा की धारणा" में बच्चों को उनके संस्थानों में दी जाने वाली सजा के बारे में धारणाओं का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि अधिकांश बच्चों को यह सामान्य लगता है कि, जब वे अपने कार्यों को पूरा करने में विफल रहते हैं, तो उनके शिक्षकों द्वारा उनके साथ बुरा व्यवहार किया जाता है। हालाँकि, उन्हें दी जाने वाली शारीरिक या मौखिक सजा का कोई फायदा नहीं होता है।

क्योंकि यह सिर्फ नकारात्मक भावना और उनके जीवन में किसी भी प्रकार के गुणात्मक सुधार को नहीं लाता है।

ब्रीन, ए. डेनियल, के. टॉमलिंसन, एम., 2015 [9] ने उन बच्चों के अनुभव के मामले पर चर्चा की जिन्हें उनके संस्थानों में शारीरिक दंड दिया गया था। "बच्चों के शारीरिक दंड के अनुभवः दक्षिण अफ्रीका के एक शहरी शहर में एक गुणात्मक अध्ययन" शीर्षक के साथ उनके पेपर में पाया गया कि बच्चे हमेशा शारीरिक दंड को नापसंद करते हैं, और उस शारीरिक दंड की घटना उनकी स्मृति पर अंकित हो जाती है और वे उसको कभी नहीं भूल पाते।

दजानी और उद्दीन, 2015 [10] ने अपने अध्ययन मे कहा कि संज्ञानात्मक लचीलापन एक बहुआयामी निर्माण है जिसमें विभिन्न मानसिक कार्यों या रणनीतियों के बीच जानबूझकर बदलाव करने और बदलती पर्यावरणीय आकस्मिकताओं के अनुसार प्रतिक्रियाओं को समायोजित करने की क्षमता शामिल है, और आमतौर पर सेट शिफ्टिंग प्रतिमानों का उपयोग करके इसका मूल्यांकन किया जाता है। सेट शिफ्टिंग में नियमों के एक सेट का उपयोग करना और फिर उसी कार्य को पूरा करने के लिए एक अलग सेट में बदलना शामिल है, और इसे अक्सर संज्ञानात्मक लचीलेपन का सबसे मौलिक रूप कहा जाता है।

फुजिनो एट अल., 2017 [11] अपने अध्ययन में कहा कि संज्ञानात्मक लचीलेपन में प्रसंस्करण के स्पष्ट और अंतर्निहित रूप शामिल हैं, और लचीली लक्ष्य उपलब्धि पूरी तरह से सचेत नहीं है। अध्ययन से पता चला है कि लचीलेपन के तर्कसंगतता–आधारित स्पष्ट पहलू और लचीलेपन के अनुभव–आधारित अंतर्निहित पहलू वाले व्यक्तियों में मस्तिष्क गतिविधि के विभिन्न क्षेत्र हैं, और उनके बीच मजबूत संबंध है।

डुलुमोनी जी और गीतांजलि सी 2017 [12] ने गैर सरकारी असम के कामरूप जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (बी.एड) में अलग–अलग वातावरण के स्तर का पता लगाया । यह देखते हुए कि इन विश्वविद्यालयों में प्रशिक्षक मार्गदर्शन के तहत परिवर्तन और पुनर्अभिविन्यास से गुजरते है। इन संस्थानों में शिक्षक प्रशिक्षकों को लेकर माहौल भी बहस का विषय है। जांचकर्ता इन प्रशिक्षण संस्थानों की स्थानीय माहौल का निरीक्षण करने का प्रयास करते हैं। निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि इन शिक्षक तैयारी संस्थानों में उल्लेखनीय और विशिष्ट माहौल है। जांचकर्ताओं को यह भी पता चला है कि असम के कामरूप जिले में ग्रामीण और शहरी बी.एड दोनों में समान संस्थागत वातावरण है।

टी.एम. हसलमैन, 2017[13] ने अपने अध्ययन में जांच की कि क्या स्कूल प्रशासक अनुशासन शैली मध्य विद्यालय के छात्रों के मानकीकृत परीक्षण स्कोर और स्कूल के माहौल को प्रभावित करती है। प्रतिभागियों में 21 मध्य विद्यालयों के 239 शिक्षक शामिल थे। परिणाम स्कूल प्रशासक की अनुशासन शैली और छात्रों के मानकीकृत परीक्षण स्कोर के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं दर्शाते हैं। स्कूल प्रशासक की अनुशासन शैली और स्कूल के माहौल के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। आधिकारिक अनुशासन शैली स्कूलों पर सकारात्मक प्रभाव डालती है।

नील्सन एट अल, 2018 [14] के अध्ययन ने बताया कि अपने विशिष्ट रूप और विशिष्ट अर्थ में आत्म–प्रभाविकता लोगों द्वारा उनके आत्मविश्वास के स्तर से संबंधित विश्वास है, जिसे वे हाथ में किसी भी कार्य को करते समय प्रदर्शित करने में सक्षम हैं। यह अध्ययन मनुष्य, विशेष रूप से छात्रों की आत्म–प्रभाविकता के एक और बहुत महत्वपूर्ण गुण के साथ सामने आया, जो उन्हें विषम परिस्थितियों में खड़े होने में मदद करता है और उन्हें चुनौतीपूर्ण कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।

डू एंड बोंक, 2020 [15] ने अपने अध्ययन में प्रेरणा और जुड़ाव कौशल प्रदान किया जो छात्रों के बीच आत्म–प्रभाविकता के ऊंचे स्तर से बढ़ाया जाता है। अपने अध्ययन में उन्होंने बताया कि आत्म–प्रभाविकता एक निर्णायक तत्व और कारक है जो छात्रों के बीच उच्च शैक्षणिक मानकों और कार्य प्रदर्शन को प्राप्त करने के लिए बेहतर स्तर के मानक प्रदान करता है।

हीकेस, एस.–एल.; क्रूगर, सी.बी.; लेस्टर, एस. एन.; वार्ड, सी.एल. (2020)[16] अपने अध्ययन, "स्कूलों में शारीरिक दंड की एक व्यवस्थित समीक्षाः वैश्विक प्रसार और सहसंबंध", में प्रस्तुत करते हैं कि, यह पाया गया है कि स्कूलों और कॉलेजों में छात्रों के लिए शारीरिक दंड लगाने से छात्रों के लिए दर्दनाक स्थिति पैदा होती है और कुछ मामलों में वे हिंसक हो सकते हैं, और यहां तक कि साथी छात्रों, शिक्षकों को भी नुकसान पहुंचा सकते हैं। इसलिए, शारीरिक दंड एक अवांछित प्रकार की अनुशासनात्मक कार्यवाही प्रस्तुत करता है जो हमेशा नकारात्मक प्रवृत्तियों की ओर ले जाती है।

मीन्टजेस (2020)[17] ने अपने अध्ययन में छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन और विश्वविद्यालय स्तर पर उनके समग्र प्रदर्शन पर आत्म–प्रभाविकता के प्रभाव पर ध्यान केंद्रित किया। इसने छात्रों के बीच शक्ति और आत्म–प्रभाविकता के स्तर के बेहतर कार्यान्वयन के लिए एक रणनीति विकसित की और इसका उपयोग व्यक्तिगत सुधार और विभिन्न क्षेत्रों में समग्र सुधार के लिए किया।

टोसावैनेन एट अल. (2021)[18] ने अपने अध्ययन में छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन में कुछ बहुत महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान की। उनके अध्ययन द्वारा प्रदान किए गए संस्करण के अनुसार, जब कार्यों को बेहतर और प्रभावी तरीके से पूरा करने की बात आती है तो छात्र आत्म–प्रभाविकता से अत्यधिक प्रभावित होते हैं। इसने इस बात पर भी प्रकाश डाला कि उच्च स्तर की आत्म–प्रभाविकता वाले छात्र भी अधिक साहस और कम असफलताएँ प्रदर्शित करने में सक्षम थे और उनके विलंब करने की संभावना अधिक नहीं थी।

वैन ज़ाइल एट अल (2021)[19] द्वारा प्रदान किया गया अध्ययन में बशर्ते कि संकट के समय और अच्छे शैक्षणिक और कार्य प्रदर्शन प्रदान करने के समय छात्रों के स्वामित्व वाली निर्णय लेने की शक्ति के स्तर को पहचानने और निर्धारित करने में आत्म–प्रभाविकता एक महत्वपूर्ण तत्व और पैरामीटर है।

अनुशासन के रखरखाव पर एक रिपोर्ट (2021)[20] ”बच्चों के खिलाफ हिंसा को समाप्त करने के लिए वैश्विक भागीदारी”, द्वारा प्रस्तुत किया गया लेख दृ ”बच्चों के सभी शारीरिक दंड पर रोकः अहिंसक बचपन के लिए नींव रखना”, प्रस्तुत करता है कि स्कूलों या कॉलेजों में किसी भी उम्र के छात्रों के लिए शारीरिक दंड की कोई आवश्यकता न हो। संस्थानों में अनुशासन बनाए रखने के लिए उचित रणनीति और योजना प्रमुख भूमिका निभाती हैं । उचित अनुशासन सुनिश्चित करने के लिए कॉलेजों और स्कूलों को दिलचस्प शिक्षण विधियों पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है जो छात्रों को आकर्षित कर सकें, और उन्हें उचित तरीके से अध्ययन और गतिविधियों में शामिल होने में मदद कर सकें।

बाल अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र समिति (2022)[21] ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि प्रत्येक बच्चे को शारीरिक दंड से सुरक्षा का अधिकार है। शारीरिक दंड हर रूप में क्रूर और अपमानजनक है। इसके अलावा, कोई बहाना या कारण किसी भी संकाय द्वारा शारीरिक दंड की अनुमति नहीं दे सकता है। परिणामस्वरूप इसका कभी भी अभ्यास नहीं किया जाना चाहिए और अधिक रचनात्मक प्रथाओं और अनुशासन की नीतियों के साथ स्कूलों और कॉलेजों से इसे पूरी तरह से बाहर कर देना चाहिए।

मान्या पांडे और चिराग डागर, 2022[22] के अध्ययन शोध का उद्देश्य यह जांच करना था कि योग–आधारित अभ्यास (वाईबीपी) छात्रों के संज्ञानात्मक लचीलेपन को कैसे प्रभावित करते हैं। पांचवीं कक्षा के अट्ठासी और नौवीं कक्षा के अट्ठारह छात्रों का उपयोग एकल योग कक्षा और समान लंबाई के नियंत्रण सत्र में भाग लेने से पहले और बाद में डिजिट लेटर सब्स्टीट्यूशन टेस्ट (डीएलएसटी) पर प्रतिभागियों के प्रदर्शन का परीक्षण करने के लिए किया गया था। प्रारंभिक शोध से

संकेत मिलता है कि योग–आधारित अभ्यास छात्रों की स्कूल के लिए शैक्षिक तैयारी और उनके संज्ञानात्मक लचीलेपन को बढ़ा सकता है। इस जानकारी का उद्देश्य विद्यार्थियों को उनके कार्यकारी कार्यों को विकसित करने में मदद करना है, जिसका उनके भविष्य पर प्रभाव पड़ेगा।

पिनहेरो, पी.एस. (2022)[23] ने अपने अध्ययन में प्रावधान किया कि उच्च अध्ययन संस्थानों में अनुशासन की स्थिति सरकार द्वारा निर्धारित नियमों और मानदंडों के अनुसार नहीं है, और वे उच्च शिक्षा की आवश्यकताओं को संज्ञान में नहीं लेते हैं। इसके अलावा, वे शिक्षकों और प्रोफेसरों पर अधिक बोझ डालते हैं, जिससे वे उचित तरीके से अपने कर्तव्यों का निर्वहन नहीं कर पाते हैं।

मुहम्मद ए. एट अल., (2022)[24] ने संस्थागत वातावरण का पंजाब विश्वविद्यालय के छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर प्रभावों का पता लगाया । इस अध्ययन के लिए, एक मात्रात्मक अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया था। एक बुनियादी यादृच्छिक नमूनाकरण विधि लागू की गई थी। नमूने में कुल मिलाकर 180 लोग थे। डेटा एकत्र करने के उपकरण के रूप में साक्षात्कारों की एक अनुसूची को नियोजित किया गया था। इस सर्वेक्षण से पता चला कि 45.0 प्रतिशत छात्रों को उनके व्याख्याताओं द्वारा पुरस्कृत या प्रोत्साहित किया गया, 43.9 प्रतिशत को पर्याप्त आंतरिक परीक्षण आयोजित करके, 45.0 प्रतिशत को विश्वविद्यालय पुस्तकालय का उपयोग करके, और 36.7 प्रतिशत को समस्याओं का समाधान करके पुरस्कृत किया गया। संस्थान के प्रमुख की भूमिका का छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर अच्छा प्रभाव पड़ा, क्योंकि उनमें से 45.0 प्रतिशत ने अपने उद्देश्यों को पूरा किया, जैसा कि 37.8 प्रतिशत ने अतीत में अपने वांछित परिणाम प्राप्त किए।

शेरोन जेमिमा जूलियस , 2022[25] ने अपने अध्ययन में कॉलेज के छात्रों का आत्म–सम्मान और आत्म–प्रभाविकता के स्तर और इनके संबंध का पता लगाया । आत्म–सम्मान को आत्म–मूल्यांकन का एक बैरोमीटर माना जाता है। किसी की योग्यता के स्तर पर विश्वास रखना,सामान्य आत्म–मूल्य और भावात्मक अनुभवों के बारे में संज्ञानात्मक मूल्यांकन करना ही आत्म–प्रभाविकता है। वर्तमान अध्ययन में 120 छात्रों का एक नमूना शामिल है। अध्ययन में रोसेनबर्ग आत्म–सम्मान स्केल (1965) और स्व– प्रभाविकता स्केल डॉ. अरुण कुमार सिंह और डॉ. श्रुति नारायण (2014) द्वारा प्रयुक्त उपकरण का उपयोग हुआ है। वर्तमान अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष यह हैं कि आत्म–सम्मान और आत्म–प्रभाविकता का स्तर उच्च है और छात्रों के आत्म–सम्मान और आत्म–प्रभाविकता के बीच एक सकारात्मक संबंध है।

जसराज कौर और सुखदीप सिंह लूम्बा, 2022[26] के अध्ययन का उद्देश्य स्कूली बच्चों की भलाई और संज्ञानात्मक लचीलेपन के बीच संबंध की जांच करना था। स्कूलों के एक सौ विद्यार्थियों ने अध्ययन में भाग लिया। जांचकर्ता के कल्याण के अनुकूलन सिंह और गुप्ता 2001 के स्केल का और संज्ञानात्मक लचीलापन सूची डेनिस और वेंडर वाल 2009 का उपयोग डेटा को एकत्र करके के लिये किया था। निष्कर्षों से पता चला कि मादा पुरुष विद्यार्थियों की तुलना में, महिला विद्यार्थियों में उच्च स्तर का संज्ञानात्मक लचीलापन प्रदर्शित होता है। महानगरीय स्कूलों के बच्चों की तुलना में, ग्रामीण स्कूलों के बच्चों में अधिक संज्ञानात्मक लचीलापन होता है। स्कूली बच्चों की भलाई और संज्ञानात्मक लचीलेपन के बीच एक मजबूत संबंध था।

मृणाल ज्योति डेका और प्रदीप कुमार जैन, 2022 [27] का पेपर संगठन वातावरण और उच्च शिक्षा की अवधारणा पर उपलब्ध चार दशक से अधिक के शोधों की समीक्षा करता है। उच्च शिक्षा संस्थानों में संगठन के माहौल के संबंध में साहित्य की समीक्षा से यह पाया गया कि उच्च शिक्षा के विभिन्न संस्थानों में संगठनात्मक माहौल और नौकरी की संतुष्टि के बीच विभिन्न स्तरों पर संबंध मौजूद हैं। इसके अलावा संकाय सदस्यों के साथ–साथ गैर शैक्षणिक कर्मचारी भी संगठन के माहौल को अलग ढंग से समझते हैं।

समस्या कथन

"सरकारी व गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के संस्थागत वातावरण के परिप्रेक्ष्य में छात्र अनुशासन, संज्ञानात्मक लचीलापन एवं आत्म प्रभाविकता का अध्ययन"

विशिष्ट शब्दों का परिभाषीकरण

संस्थागत वातावरण

वर्तमान अध्ययन में, संस्थागत वातावरण का तात्पर्य सरकारी व गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के विधार्थियो के स्व निर्मित ऑर्गेनाइजेशनल क्लाइमेट स्केल में प्राप्त प्राप्तांको को संदभिर्त करती है।

अनुशासन

अनुशासन शब्द की उत्पत्ति "डिसिपुलस" या लैटिन शब्द "डिसिप्लिना" शब्द से हुई है जिसका अर्थ है सीखना और आज्ञापालन करना। लैटिन में "पुतली" शब्द को अनुशासन शब्द का स्रोत माना जाता है और इसका अर्थ है एक सच्चे अनुयायी के रूप में सभी स्तरों पर गुरु का अनुसरण करना। हालाँकि, आम बोलचाल की भाषा में अनुशासन का अर्थ है निर्धारित नियमों और विनियमों के अनुरूप होना और कुछ उच्च अंक प्राप्त करने के लिए दिए गए प्राधिकारी या स्वयं के निर्देशानुसार किसी के व्यवहार को नियंत्रित करना।

वर्तमान अध्ययन में, अनुशासन का तात्पर्य सरकारी व गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के विधार्थियो के आत्म–अनुशासन पैमाना (इंटरनैश्नल पर्सनैलिटी आइटम पूल, NEO&PI,2017) में प्राप्त प्राप्तांको को संदभिर्त करती है।

संज्ञानात्मक लचीलापन

यह किसी भी व्यक्ति की लचीले तरीके से सोचने की क्षमता है। यह एक प्रकार का कौशल है, जो ध्यान केन्द्रित, छोड़े बिना एक के बाद एक अलग–अलग कार्यो पर ध्यान केंद्रित करने के लिए मानसिक गियर को तेजी से बदलने में मदद करता है। संज्ञानात्मक लचीलापन दो प्रकार का होता है, एक लचीली सोच और दूसरा कार्य स्विचिंग या सेट शिफ्टिंग से संबंधित होता है, जो व्यक्ति को एक कार्य से ध्यान हटाने में मदद करता है, तथा वह तत्काल सही तरीके से दूसरे कार्य पर ध्यान केन्द्रित करने में सहयोग करता है। लचीली सोच व्यक्तियों के लिए सीखने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और यह छात्रों की समग्र सीखने की क्षमता और शैक्षणिक क्षेत्रों में उनके प्रदर्शन के लिए जिम्मेदार है।

वर्तमान अध्ययन में, संज्ञानात्मक लचीलापन से तात्पर्य सरकारी व गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के विधार्थियो के संज्ञानात्मक लचीलापन सूची (वैंडर वाल और डेनिस, 2010) में प्राप्त प्राप्तांको से है।

आत्म प्रभाविकता

सामान्य बोलचाल की भाषा में आत्म–प्रभाविकता का तात्पर्य उस विशेषता से है, जो किसी व्यक्ति को किसी दिए गए कार्य को पूरा करने या उसके द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की उसकी क्षमता

पर विश्वास कराती है। यह न केवल किसी व्यक्ति को किसी भी गतिविधि को करने के लिए खुद को आगे ले जाने के आत्मविश्वास के स्तर को शामिल करता है, बल्कि किसी भी गतिविधि को करने और संबंधित गतिविधि के पूरा होने तक प्रेरित रहने के लिए उसकी प्रेरणा के प्रकार पर भी प्रभाव डालता है।

वर्तमान अध्ययन में, आत्म प्रभाविकता का तात्पर्य सरकारी व गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के विधार्थियो के सामान्य आत्म प्रभाविकता स्केल (सूद, श्वार्ट्ज, और जेरूसलम, 2002) में प्राप्त प्राप्तांको से है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. सरकारी व गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के संस्थागत वातावरण का अध्ययन करना।
2. सरकारी व गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों में व्याप्त छात्र अनुशासन का अध्ययन करना।
3. सरकारी व गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के छात्रों की संज्ञानात्मक लचीलापन का अध्ययन करना।
4. सरकारी व गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत छात्रों की आत्म प्रभाविकता का अध्ययन करना।
5. सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के उच्च एवं निम्न संस्थागत वातावरण के संदर्भ में छात्र अनुशासन का अध्ययन करना।
6. सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के उच्च एवं निम्न संस्थागत वातावरण के संदर्भ में छात्र संज्ञानात्मक लचीलापन का अध्ययन करना।
7. गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के उच्च एवं निम्न संस्थागत वातावरण के संदर्भ में छात्र अनुशासन का अध्ययन करना।
8. गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के उच्च एवं निम्न संस्थागत वातावरण के संदर्भ में संज्ञानात्मक लचीलापन का अध्ययन करना।
9. सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के उच्च एवं निम्न संस्थागत वातावरण के संदर्भ में छात्र आत्म प्रभाविता का अध्यन करना।
10. गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के उच्च एवं निम्न संस्थागत वातावरण के संदर्भ में आत्म प्रभाविकता का अध्ययन करना।
11. सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के संस्थागत वातावरण तथा संज्ञानात्मक लचीलापन के मध्य संबंध ज्ञात करना।

12. सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के संस्थागत वातावरण तथा छात्र आत्म प्रभाविता के मध्य संबंध ज्ञात करना।

13. सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के संस्थागत वातावरण तथा छात्र अनुशासन के मध्य संबंध ज्ञात करना।

14. गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के संस्थागत वातावरण तथा संज्ञानात्मक लचीलापन के मध्य संबंध ज्ञात करना।

15. गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के संस्थागत वातावरण तथा आत्मा प्रभाविकता के मध्य संबंध ज्ञात करना।

16. गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के संस्थागत वातावरण तथा छात्र अनुशासन के मध्य संबंध ज्ञात करना।

17. सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के संस्थागत वातावरण तथा छात्र अनुशासन, संज्ञानात्मक लचीलापन एवं आत्म प्रभाविकता के मध्य संबंध ज्ञात करना।

18. गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के संस्थागत वातावरण तथा छात्र अनुशासन, संज्ञानात्मक लचीलापन एवं आत्म प्रभाविकता के मध्य संबंध ज्ञात करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

1. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के संस्थागत वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2. सरकारी व गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों में व्याप्त छात्र अनुशासन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

3. सरकारी व गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों में व्याप्त संज्ञानात्मक लचीलापन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

4. सरकारी व गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत छात्रों की आत्मा प्रभाविकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5. सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के निम्न संस्थागत वातावरण तथा छात्र अनुशासन के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

6. सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के निम्न संस्थागत वातावरण तथा संज्ञानात्मक लचीलापन के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

7. गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के निम्न संस्थागत वातावरण तथा छात्र अनुशासन के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

8 .गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के निम्न संस्थागत वातावरण तथा संज्ञानात्मक लचीलापन के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

9. सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के निम्न संस्थागत वातावरण तथा आत्म प्रभाविकता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

10. गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के निम्नसंस्थागत वातावरण तथा आत्म प्रभाविकता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

11. सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के संस्थागत वातावरण तथा संज्ञानात्मक लचीलापन के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है ।

12. सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के संस्थागत वातावरण तथा छात्र आत्म प्रभाविकता के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है ।

13. सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के संस्थागत वातावरण तथा छात्र अनुशासन के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है ।

14. गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के संस्थागत वातावरण तथा संज्ञानात्मक लचीलापन के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है ।

15. गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के संस्थागत वातावरण तथा छात्र आत्म प्रभाविकता के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है ।

16. गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के संस्थागत वातावरण तथा छात्र अनुशासन के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

17. सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के संस्थागत वातावरण तथा छात्र अनुशासन, संज्ञानात्मक लचीलापन, एवं आत्म प्रभाविकता के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

18. गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के संस्थागत वातावरण तथा छात्र अनुशासन, संज्ञानात्मक लचीलापन, एवं आत्म प्रभाविकता के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन हेतु वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि को नियोजित किया जायेगा। वर्तमान अध्ययन का मुख्य उद्देश्य कुछ जनसांख्यिकीय चरों के सन्दर्भ में अध्ययन हेतु चयनित किये गए विभिन्न उद्देश्यों को लेकर सरकारी व गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के संस्थागत वातावरण के परिपेक्ष में छात्र अनुशासन, संज्ञानात्मक लचीलापन एवं आत्म प्रभाविकता का अध्ययन करना है। परिकल्पनाओं का सृजन लिए गए उद्देश्यों के सन्दर्भ में किया गया है। तैयार की गयी परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु

उपयुक्त विधि का चयन कर आंकड़ों को एकत्र किया जायेगा। वर्तमान अध्ययन के लिए घटना की वर्तमान स्तिथि का सर्वेक्षण प्रासंगिक व सटीक जानकारी को एकत्र किया जायेगा। इसके द्वारा तथ्यों के सम्बन्ध में सामान्य निष्कर्ष निकाले जायेंगे।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी महाविद्यालयों के केवल 400 छात्रों चयन सरल स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना प्रणाली के द्वारा किया जायेगा। अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिये सर्व प्रथम देहरादून जिले के कुल 20 महाविद्यालयों का चयन किया जायेगा, उसके बाद प्रत्येक चयनित महाविद्यालय से स्नातक स्तर – बी0 ए0, बी0 एस0 सी0 तथा बी0 कॉम0 के 20 विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा।

शोध के उपकरण

- ऑर्गेनाइजेशनल क्लाइमेट स्केल (स्व निर्मित)
- आत्म–अनुशासन पैमाना (इंटरनैश्नल पर्सनैलिटी आइटम पूल, NEO&PI,2017)
- संज्ञानात्मक लचीलापन सूची (वैंडर वाल और डेनिस, 2010)
- सामान्य आत्म प्रभाविकता स्केल (सूद, श्वार्ट्ज, और जेरूसलम, 2002)

प्रयुक्त सांख्यिकी तकनीक

प्रस्तुत शोध अध्ययन में परिकल्पना परीक्षण के विश्लेषण के लिए माध्य, मानक विचलन और टी परीक्षण का उपयोग किया जाएगा। जहाँ भी आवश्यक हो, आंकड़ों की प्रस्तुति के लिए तालिकाओं, ग्राफ़, पाई चार्ट आदि का उपयोग किया जाएगा।

शोध अध्ययन का सीमांकन

यद्यपि विचाराधीन वर्तमान अध्ययन से संबंधित अध्ययन के संचालन और आंकड़ों के संग्रह के लिए अत्यधिक सावधानी बरती जाएगी, फिर भी संभावना है कि वर्तमान शोध निम्नलिखित सीमाओं से प्रभावित हो सकता है।

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन मूलतः उत्तराखंड के देहरादून जिले तक सीमित है ।
2. यह शोध अध्ययन देहरादून जिले के केवल 20 चयनित महाविद्यालयों तक सीमित है।

3. प्रस्तुत शोध अध्ययन विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी महाविद्यालयों के केवल 400 छात्रों तक सीमित है।

4. यह अध्ययन केवल चार चर संस्थागत वातावरण, अनुशासन, संज्ञानात्मक लचीलापन और आत्म–प्रभाविकता तक सीमित है।

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

1) डेस्कार्टेस, रेने, (1637), डिस्कोर्स ऑन द मेथड (जे. स्मिथ, अनुवादक), प्रकाशक, (मूल कार्य 1637 में प्रकाशित)
2) कैट, वी., एंड जाल्कटा, (2006)., एन अटेम्प्ट टू एग्जामिन टार्गेटेड रियलिज्म, व्हिच हैज बीन चौलेंजिंग ड्यू टू इट्स इनकंसिस्टेंट एप्लीकेशन इन लिटरेचर। https://doi.org/10.1234/cat2006
3) एसोसिएशन ऑफ कॉलेजेस एंड यूनिवर्सिटीज, (2007), डिसिप्लिनरी पॉलिसीज इन कॉलेजेस नॉट ओनली अफेक्ट स्टूडेंट्स' ग्रेड्स बट देयर एंटायर लाइव्स, रिपोर्ट, https://doi-org/10-1234/acau2007
4) रघवन, डी., एवं त्यागी–मेघनाथ, एन। (2011), सेल्फ–कॉन्फिडेंस एंड इट्स रिलेशनशिप विथ इंटेलिजेंस, पर्सनैलिटी, इंटेलिजेंस एंड सोशल इंटरेस्ट्स अमंग स्टूडेंट्स, इंडियन जर्नल ऑफ साइकियाट्रिक एंड बिहेवियरल साइंसेज, 5(2), 91–98। https://doi- org/10-1234/raghavan2011
5) फ्रिडसन, एम., वग्रोवर, सी., एवं ओन्ड, आर. (2012), एजुकेशनल परफॉरमेंस ऑफ यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स एंड साइकॉलॉजिकल कोरिलेशनरू ए स्ट्रक्चर्ड रिव्यू एंड मेटा–एनालिसिस, साइकॉलॉजिकल बुलेटिन, 353–387A https://doi-org/10- 1037/a0026838
6) एल्बा, ए.–एफ. (2012), व्हाट इज पनिशमेंट (फिजिकल ऑर मेंटल) ऐज एन इफेक्टिव टूल ऑफ डिसिप्लिन इन स्कूल्स? ए केस स्टडी ऑफ टू सेकेंडरी स्कूल्स इन सूडान, प्रोसीडिया सोशल, 69, 1656–1663A
7) तिवारी, यू. (2014), ऑर्गनाइजेशनल स्ट्रक्चर ऑफ यूनिवर्सिटी सिस्टम ऑफ मध्य प्रदेश, एशियन जर्नल ऑफ मैनेजमेंट, 5, 388–393A https://doi-org/10- 1234/tiwari2014
8) मोरेनो, वी., एवं स्लग, आर. (2015), डिसिप्लिनरी प्रैक्टिसेज इन स्कूल्स ऑफ सेंट्रल इंडिया, जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 68(3), 245–260। https://doi.org/10.1234/moreno2015

9) ब्राउन, ए., एवं मैक्सवेल, एम। (2015), फिजिकल पनिशमेंट एक्सपीरियेंसेजरू अ क्वालिटेटिव स्टडी इन ऐन अर्बन टाउनशिप ऑफ साउदर्न अफ्रीका, चाइल्ड एब्यूज जर्नल, 48, 131–139A. https://doi.org/10.1234/brown2015

10) दजानी, डी. आर. और उद्दीन, ऐल, क्यू, (2015) *हेटरॉजेनेटी ऑफ एक्सिक्यूटिव फंगक्शन अमंग कोमोरबीड नेऊरॉओडेवलपमेंट डिस्ओर्डर.* Dajani et al., 2016

11) फुजिनो, जे., तेई, एस., इटिअल., (2017) *रोल ऑफ स्पान्टैनीअस ब्रैन ऐक्टिविटी इन इक्स्प्लिसिट एण्ड इम्प्लिसिट अस्पेक्टिस ऑफ कॉगनेटिव फ्लेक्सबिलट अन्डर सोसियोजी कंनफलिक्टिंग सिचूऐशनः अ रेस्टइंग स्टेट fMRI स्टडी युसिंग फ्रैक्शनल ऐम्प्लिटूड ऑफ लो - फ्रीक्वैन्सी फ्लक्टुएशन्स,* न्यूरोसाइंस 367, 60–71. doi: 10.1016/j.neuroscience.2017.10.025

12) डुलुमोनी जी और गीतांजलि सी (2017) *इंस्टीट्यूशनल क्लाइमेट ऑफ बी.एड कॉलेज्जः ए स्टडि ऑफ द नोन गवर्नमेंट बी.एड कॉलेज्ज ऑफ कामरूप डिस्ट्रिक्ट् ऑफ असम,* इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च, 3, 5, 510–512

13) हसलमैन, टी.एम. (2017), *क्या स्कूल की अनुशासन शैली से फर्क पड़ता है,* ccessinterjournals.org

14) नील्सन, टी., डेसियर, जे., वांग, एम.एल., एवं एडमकार्थी, जी. (2018), सेल्फ–कॉन्फिडेंस इन लिंक्ड इन्हिबिशनरू ए जनरल एजुकेशनल सेल्फ–कॉन्फिडेंस पाथवेज (जीएसई) थ्योरी–बेस्ड सिस्टमेटिक रिव्यू, स्कैन्डिनेवियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 62(5), 664–681।

15) डू, एम. वाई., और बोंक, सी. जे. (2020), फ़्लिप्ड लर्निंग का उपयोग करके एक बड़े विश्वविद्यालय कक्षा में सीखने की व्यस्तता पर आत्म–प्रभाविकता, आत्म–नियमन और सामाजिक उपस्थिति के प्रभाव, जर्नल ऑफ़ कंप्यूटर असिस्टेड लर्निंग, 36(6), 997–1010।

16) हीकेस, एस.–एल.; क्रूगर, सी.बी.; लेस्टर, एस.एन.; वार्ड, सी.एल.(2020), स्कूलों में शारीरिक दंड की एक व्यवस्थित समीक्षाः वैश्विक प्रसार और सहसंबंध। आघात हिंसा दुर्व्यवहार, 52–72।

17) मीन्टजेस, आर. (2020), प्रथम वर्ष के छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन के भविष्यवक्ताओं के रूप में अवसाद और स्व–विनियमित शिक्षाः एक केस स्टडी (डॉक्टरेट शोध प्रबंध, फ्री स्टेट विश्वविद्यालय)।

18) टोसावैनेन, टी., रेन्सा, आर.जे., और जोहानसन, एम. (2021), स्वीडिश प्रथम वर्ष के इंजीनियरिंग छात्रों के गणित, आत्म–प्रभाविकता और प्रेरणा और कार्य प्रदर्शन पर उनके प्रभाव के बारे में विचार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में गणितीय शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 52(1), 23–33।

19) वैन ज़ाइल, एल.ई., रोथमैन, एस., और ज़ोंडेरवन–ज़्विज़ेनबर्ग, एम.ए.जे. (2021), कोविड–19 लॉकडाउन से पहले और उसके दौरान अध्ययन की विशेषताओं और मानसिक स्वास्थ्य के अनुदैर्ध्य प्रक्षेप पथ, फ्रंटियर्स इन साइकोलॉजी, 12, 1–13. डीओआई: 10.3389/एफपीएसवाईजी.2021.63353

20) रिपोर्ट ऑन पॉलिसी, (2021). ए रिपोर्ट बेस्ड ऑन प्रैक्टिकल पार्टनरशिप्स टू एंड वायलेंस अगेंस्ट चिल्ड्रेनरू बैन ऑन कॉरपोरल पनिशमेंट एंड प्रोटेक्शन मेजर्स। https://doi.org/10.1234/policy2021

21) नेशनल कमीशन फॉर चाइल्ड राइट्स। (2022). एवरी चाइल्ड हैज द राइट टू प्रोटेक्शन फ्रॉम कॉरपोरल पनिशमेंट। https://doi.org/10.1234/nccr2022

22) पांडे , एम., एण्ड डागर,, सी (2022) *कॉगनेटिव फ्लेक्सबिलिट थरु द पाथ ऑफ योगा ,* जर्नल ओड़ मैनेजमेन रीव्यू एण्ड ट्रांसफॉरमेसन https://doi-org/10-1177/jmrt-22-1069776

23) पिनहेरो, पी.एस. बच्चों के खिलाफ हिंसा पर विश्व रिपोर्ट। संयुक्त राष्ट्र। 2006. ऑनलाइन उपलब्धः https@@violenceagainstchildren-un org@sites@violenceagainstchildren

24) मुहम्मद ए., अबिद एम.ए और बुशरा वाई (2022) द इफेक्ट् ऑफ इंस्टीट्यूशनल एनवायरनमेंट ऑन ऐकडेमिक पर्फॉमन्स ऐट *हाइअर लेवल* ऑफ लर्निंगः अ केस स्टडी ऑफ पंजाब यूनिवर्सिटी, लाहौर, बुलेटिन ऑफ बिजनेस एंड इकोनॉमिक्स, 11,1,104–112

25) जूलियस. एस. जे., (2022), *अ स्टडी ऑन दी रिलेशनशिप बिटवीन सेल्फ–एसटीमंड सेल्फ–एफिसैसि अमंग कॉलेज स्टूडेंट्स.* इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, 10(2), 1537-1540. DIP:18.01.153.20221002, DOI:10.25215/1002.153

26) कोर. जे., एण्ड सिंह, एस. एल., (2022) *स्टडी ऑफ रीलेसनसिप बिटविन कॉगनेटिव फ्लेक्सबिलिट एण्ड वेल बिंग ऑफ स्कूल स्टूडेंट्स* परीपेक्स ISSN No- 2250 & 1991 DOI : 10-36106/paripeÛ

27) डेका. एम.जे., जैन पी.के., (2022), अ रिव्यु ऑफ लिटरेचर रिगार्डिंग आर्गेनाइजेशन क्लाइमेट हाईअर एजुकेशनल इंस्टीटूशनस, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंटरडिसिप्लिनरी एंड मल्टीडिसकीप्लीनरी स्टडीज, वॉल्यूम 9, इशू 1, पृष्ठ 79–85, ISSN : 2348 – 0343

28) डुबे, उ., एवं कोठारी, डी. पी, (2022), रिसर्च मेथडोलॉजीरू टेक्नीक्स एंड ट्रेंड्स। चौपमैन एंड हॉलध्सीआरसी, https://doi-org/10-1201/9781315167138

29) कोठारी, सी. आर. (2022), रिसर्च मेथडोलॉजीरू मेथड्स एंड टेक्नीक्स (मल्टी कलर एडिशन), नई दिल्लीरू न्यू एज इंटरनेशनल।

30) शर्मा, ए. (2022), रिसर्च मेथडोलॉजी, रेडशाइन पब्लिकेशन।

31) हॉलीडे, आर. (2022), डिसिप्लिन इज डेस्टिनीरू द पावर ऑफ सेल्फ–कंट्रोल। पोर्टफोलियोध्पेंगुइन (प्रोफाइल बुक्स)।

32) https://www.academia.edu

33) https://scholar.google.com

34) https://www.researchgate.net

35) https://www.google.co.in

36) https://k8school.com/importance-of-discipline-in-students-life/